❀ श्रीवीतरागाय नमः ❀

श्री सुखसागर ज्ञानबिन्दु नं० ११०

जीवाजीव रासी प्रकाश

और

दण्डकका यन्त्र ।

प्रकाशक—

ज्ञानचन्द्र कोचर,

मु० बीकानेर ।

हाल मु० कलकत्ता ।

वीर सम्वत् २४५२ वि० स० १९८३

मूल्य पठन-पाठन ।

दो शब्द

प्रिय जैन बन्धुओ !

इस असार संसार में केवल धर्म ही सार वस्तु है, इसीके साधन द्वारा मनुष्य परम पद को प्राप्त करता है। अब इसके साधन के लिए पुस्तकों का पढ़ना गुरुओं से उपदेश ग्रहण करना मुख्य है कारण धर्म के मर्म को जाने बिना आत्मोद्धार नहीं हो सकता। जैनधर्म के सूक्ष्म मार्गों का अवलोकन कर हृदयङ्गम करना प्रत्येक जैनी का कर्त्तव्य है। यही समझ कर मैंने भी श्रीमान् वृहद् खरतरगच्छ भूषण मुनिराज श्री १००८ श्रीहरिसागरजी के लिखित उपदेशानुसार इस 'जीवाजीव राशी प्रकाश' पुस्तक और दण्डक के थोकड़े को अपनी स्वर्गवासी भार्या "रत्न" के स्मरणार्थ छपाकर बिना मूल्य प्रकाशित किया है, इस पुस्तक को पढ़ने से मनुष्य जीव अजीव के भेदों का अतिशीघ्र बोध पाकर अपने हृदय के विचारार्थ फल को प्राप्त करता है इस लिए आशा है उदार सज्जनगण इस पुस्तक से लाभ उठाकर अपनी आत्मा का कल्याण करेंगे यह पुस्तक पन्नवणादि सूत्रों के भावों से संग्रहित की गई है इसकी १००० कॉपी आगे स्वनाम धन्य स्वर्गवासी साध्वीजी पुण्य श्री जी की देख रेख में निकल कर बड़ा ख्याति प्राप्त कर चुकी है इस समय इसका अभाव होने से पुनः पाठकों के सामने मैंने प्रगट की है इसका प्रूफ इत्यादि संशोधन कार्य मुझ आप [illegible] ने किया है इस लिए त्रुटियों को क्षमाकर सार बात ग्रहण कर अनुगृहित करेंगे।

विनयी—

ज्ञानचन्द्र कोचर।

❀ ॥ ॐ ॥ ❀

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जीवाजीव रासी प्रकाश ।

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

स्रग्धरा छंद.

अर्हंतो ज्ञानभाजः सुरवर महिता सिद्धि सौद्धस्थसिद्धा । पंचाचार प्रवीणा प्रगुण गणधरा पाठकाश्चा गमाना ॥ लोके लोकेश वंद्या सकल यतिवरा साधु धर्मा भिलीना । पंचा प्येते सदाप्ता विद धतु कुशलं विघ्ननाश विधाय ॥ १ ॥

प्रथम श्री अरिहन्त देव तथा गुरु चरण कमलोंमें नमस्कार करके हमने जीवाजीव रासी का विस्तार लिखनेका साहस किया है, उसे सर्व सज्जन पाठकगण अपने हृदय कमलमें स्थान देकर पूर्ण दृष्टि से पढ़ेंगे, ऐसी आशा है।

खास करके जैन सिद्धांतों में जो जीव और अजीव रासी का वर्णन किया गया है। उनके ५६३ तथा ५६० ऐसे प्रथक २ भेद होते हैं उनमें से —

प्रथम जीवरासी के भेद इस प्रकार हैं।

१४ नर्कके ४८ तिर्यचके ३०३ मनुष्यके
१६८ देवताके (एवंकारे ५६३ भेद हुवे।)

नर्कके १४ भेद।

सातो नर्कोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता करते हुवे १४ भेद हुवे।

(नर्कके १४ द्वारों का वर्णन)

१ नाम द्वार २ गोत्र द्वार ३ आयुष्य द्वार
४ देहमान द्वार ५ पाथड़ा द्वार ६ आतरा द्वार
७ नर्कावासा द्वार ८ जाड़पणा द्वार
९ विरह द्वार १० लेश्या द्वार
११ अवधीज्ञान द्वार १२ वलिया द्वार
१३ चवन उपजन्म द्वार १४ गत्यागति द्वार

प्रथम नाम द्वार।

१ घमा २ वशा ३ शेला ४ अंजणा
५ रिट्टा ६ मघा ७ माघवती

द्वितीय गोत्र द्वार ।

१ रत्नप्रभा २ शर्करप्रभा ३ वालुकाप्रभा
४ पङ्कप्रभा ५ धुमप्रभा ६ तम प्रभा
७ तमस्तमप्रभा

तृतीय आयुष्य द्वार ।

सचय ।

जघन्य १०००० वर्ष उत्कृष्ट ३३ सागरोपम

नम्बर	नाम	जघन्य	उत्कृष्ट
१	नर्क (रत्नप्रभा)	१०००० वर्ष	१ सागरोपम
२	नर्क (शर्करप्रभा)	१ सागरोपम	३ सागरोपम
३	नर्क (वालुकाप्रभा)	३ सागरोपम	७ सागरोपम
४	नर्क (पङ्कप्रभा)	७ सागरोपम	१० सागरोपम
५	नर्क (धुमप्रभा)	१० सागरोपम	१७ सागरापम
६	नर्क (तम प्रभा)	१७ सागरोपम	२२ सागरोपम
७	नर्क (तमस्तमप्रभा)	२२सागरोपम	३३ सागरोपम

चतुर्थ देहमान द्वार ।

नम्बर	नाम	धनुष	अंगुल
१	नर्क (रत्नप्रभा)	७॥।	६
२	नर्क (शर्करप्रभा)	१५॥	१२
३	नर्क (वालुकाप्रभा)	३१।	०
४	नर्क (पङ्कप्रभा)	६२॥	०
५	नर्क (धूमप्रभा)	१२५	०
६	नर्क (तम प्रभा)	२५०	०
७	नर्क (तमस्तमप्रभा)	५००	०

नोट—यदि उत्तर वैक्रिय किया जाय तो देवता एक लाख जोजन मनुष्य उनसे कुछ अधिक तिर्यंच नवसे जोजन और नेरइये अपनी देहसे द्विगुना २ कर सकते हैं जिनकी कि स्थिति पन्द्रह दिन चार चार मुहूर्त तथा अंतर मुहूर्त की हो सक्ती है ।

पंचम पाथड़ा तथा षष्टम आंतरा द्वार।

नम्बर	नाम	पाथड़े	आतरे
१	नर्क (रत्नप्रभा)	१३	१२
२	नर्क (शर्करप्रभा)	११	१०
३	नर्क (वालुका प्रभा)	९	८
४	नर्क (पङ्कप्रभा)	७	६
५	नर्क (धूमप्रभा)	५	४
६	नर्क (तम प्रभा)	३	२
७	नर्क (तमस्तमप्रभा)	१	

पाथड़े निवासियो का आयुष्य।

पहलो रत्न प्रभा नर्क के पाथड़े निवासियो का आयुष्य।

नम्बर पाथड़े	जघन्य	उत्कृष्ट
१	१००००वर्ष	६००००वर्ष
२	१००००००वर्ष	६००००००वर्ष
३	६००००००वर्ष	१पूर्व कोडी
४	१पूर्व कोडी	१ भाग
५	१ भाग	२ भाग
६	२ भाग	३ भाग
७	३ भाग	४ भाग
८	४ भाग	५ भाग
९	५ भाग	६ भाग
१०	६ भाग	७ भाग
११	७ भाग	८ भाग

* जिसमें जितने पाथड़े हो उसमें उतनही भागका एक सागर मानना, अलबत्ता प्रथम नर्क में तीन छोड़कर बाकी दश भाग का सागर मानना।

१२	८ भाग	९ भाग
१३	९ भाग	१० भाग

कुल १ सागर

दूसरीनर्कके११पाथड़े निवासियोंका आयुष्य

नम्बर पाथड़े	जघन्य		उत्कृष्ट	
	सागर	भाग	सागर	भाग
१	१	०	१	२
२	१	२	१	४
३	१	४	१	६
४	१	६	१	८
५	१	८	१	१०
६	१	१०	१	१२
७	१	१२	१	१४
८	१	१४	१	१६
९	१	१६	१	१८
१०	१	१८	१	२०
११	१	२०	१	२२

कुल सागर १+२=३

तीसरी नर्कके ९ पाथड़े निवासियों का आयुष्य

नम्बर पाथड़े	जघन्य		उत्कृष्ट	
	सागर	भाग	सागर	भाग
१	३	०	३	४
२	३	४	३	८
३	३	८	३	१२
४	३	१२	३	१६
५	३	१६	३	२०
६	३	२०	३	२४
७	३	२४	३	२८
८	३	२८	३	३२
९	३	३२	३	३६

कुल सागर ३+४=७

चौथी नर्क के ७ पाथड़े निवासियो का आयुष्य

नम्बर पाथड़े	जघन्य		उत्कृष्ट	
	सागर	भाग	सागर	भाग

१	७	०	७	३
२	७	३	७	६
३	७	६	७	६
४	७	६	७	१२
५	७	१२	७	१५
६	७	१५	७	१८
७	७	१८	७	२१

कुल सागर ७+३=१०

पांचवीं नर्क के ५ पाथड़े निवासियो का आयुष्य ।

नम्बर पाथड़े	जघन्य		उत्कृष्ट	
	सागर	भाग	सागर	भाग
१	१०	०	१०	७
२	१०	७	१०	१४
३	१०	१४	१०	२१
४	१०	२१	१०	२८
५	१०	२८	१०	३५

कुल सागर १०+७=१७

छठो नर्क के ३ पाथड़े निवासियों आयुष्य।

नम्बर पाथड़े	जघन्य		उत्कृष्ट	
	सागर	भाग	सागर	भाग
१	१७	०	१७	५
२	१७	५	१७	१०
३	१७	१०	१७	१५

कुल सागर १७+५=२२

सप्तमी नर्कका जो केवल १ पाथड़ा है उसके निवासियो का

जघन्य २२ सागरोपम व उत्कृष्ट ३३ सागरोपम का आयुष्य है।

पाथडे निवासियो का देहमान—❋

प्रथम नर्क के १३ पाथड़े हैं। जिनमेंसे प्रथम पाथड़ेवालों का देहमान ३ हाथ का है बाकी जो १२ पाथड़े हैं उनमें एक एक पाथड़े में साढेछपन २ अङ्गुल बढ़ते गये। इस तरह बारह

❋ इसकी गिनतीमें चौबीस अ गुलका एक हाथ तथा चार हाथका एक धनुष होता है।

पाथडे वालोंका देहमान गिनते हुये तथा तीन तीन हाथ उसमें मिलाते हुवे नियमानुसार ७॥ धनुष तथा ६ अङ्गुल हुवे ।

द्वितीय नर्क के ११ पाथडे हैं उनमें से प्रथम पाथडे वालोंका देहमान ७॥ धनुष और ६ अङ्गुल का है, बाकी जो १० पाथडे हैं उनमें एक एक में तीन तीन हाथ और तीन तीन अङ्गुल बढते गए। उनकी नियमानुसार गिनती करने से १५॥ धनुष १२ अङ्गुल हुवे ।

तृतीय नर्क के ९ पाथडे हैं उनमें से प्रथम पाथडे वालोंका देहमान १५॥ धनुष और १२ अङ्गुल हैं। बाकी जो ८ पाथडे हैं, उनमें एक एक में सात सात हाथ और साढे गुन्नीस २ अगुल बढते गए नियमानुसार गिनती करने से ३१। धनुष हुवे ।

चतुर्थ नर्क के ७ पाथडे हैं उनमें से प्रथम वाले का देहमान ३१। धनुष है बाकी जो ६ पाथडे हैं उनमें एक २ में पाच २ धनुष और बीस २ अगुल बढते गये उनकी नियमानुसार गिनती करने से ६२॥ धनुष हुवे ।

पंचम नर्क के ५ पाथडे हैं उनमें से प्रथम वाले का देहमान ६२॥ धनुष है बाकी जो ४ पाथडे हैं उनमें एक एक में पन्द्रह २ धनुष और अढाई २ हाथ बढते गए उनका नियमानुसार गिनती करने से १२५ धनुष हुवे ।

षष्ठम नर्क के ३ पाथडे हैं उनमें से प्रथम वाले का देहमान १२५ धनुष है बाकी जो२ पाथड हैं उनमें एक एकमें साढेबासट २ धनुष बढते गए उनको नियमानुसार गिनती करने से २५० धनुष हुवे ।

सप्तम नर्क का एक पाथडा है उनके निवासियों का देहमान ५०० धनुष का है ।

सप्तम नर्कावासा द्वार अष्टम जाडपण द्वार

नम्बरनर्क	नर्कावासा	नं० नर्क	जाडापण
१	३००००००	१	१८०००० जोजन
२	२५०००००	२	१३२००० ,,
३	१५०००००	३	१२८००० ,,
४	१००००००	४	१२०० ० ,,
५	३०००००	५	११८०००
६	५ न्यून १०००००	६	११६००० ,,
७	५*	७	१०८००० ,,

कुल ८४००००० हुये।

---

* पांच नर्कावासा के नाम—काल, महाकाल रु महारु, अपयठाण।

नवम विरहद्वार   दसम लेश्या द्वार।

न० नर्क	विरह			न० नर्क	नाम लेश्या।
	मुहूर्त	दिन	मास।		
१	२४	०	०	१	कापोत
२	०	७	०	२	,,
३	०	१५	०	३	कापोतअधिक नील कम
४	०	०	१	४	नील
५	०	०	२	५	नीलअधिक कृष्णकम
६	०	०	४	६	कृष्ण।
७	०	०	६	७	महा कृष्ण।

एकादशमो अवधो ज्ञान द्वार।

नम्बर नर्क	जघन्य गाउदेखे	उत्कृष्ट गाउदेखे
१ नर्क के नेरइये,	३॥	४
२ ,,	३	३॥
३ ,,	२॥	३
४ ,,	२	२॥
५ ,,	१॥	२
६ ,,	१	१॥
७ ,,	॥	१

द्वादशमो वलिया द्वार ।

पहिली नर्क से अलोक १२ जोजन ।

घनोदधी ६ जोजन घनवात ४॥ जोजन तनवात १॥ जोजन ।

❋ सप्तमी नर्क से अलोक १६ जोजन घनोदधी ८ जोजन, घनवान ६ जोजन, तनवात २ जोजन।

१२ भाग हुवे १२ भाग के ४ जोजन होने से कुल १६ जोजन ।

त्रयोदशमोचवन उपजन्म द्वार ।

एक समय में संख्यात तथा असंख्यात ।

❋ पहिली नर्क से सप्तमी तक हरेक नर्क में घनोदधी १ गाउ पचभाग घनवात १ गाउ और तनवात १ भाग बढतागया ।

चतुर्दशमो गत्यागती द्वार[१]।

नं० नर्क	आगती (कौन जावे)	नं० नर्क	गती (आकरकौनहोवे)
१	असन्नी	१	चक्रवर्ती
२	गौ प्रमुख	२	वासुदेव, बलदेव
३	गिद्ध प्रमुख	३	तीर्थंकर
४	सिंह	४	केवली
५	सर्प	५	सर्व विरति
६	स्त्री	६	देश विरति
७	मनुष्य मच्छरादि	७	सम्यक्तवधारी (सम्यक्तवधारी)

---

१ इससे यह नहीं ख्याल कियाजानाचाहिये कि जिस जिसका नामलिखा उसमें वोही जावे या आकर वोहीहो उदाहरण ? स्त्री छट्ठी नर्क में जावे इससे ये नहीं कहाजासकता कि पांचवीं में नहीं जावे हां अलबत्ता छट्ठी से आगे नहीं जासक्ती।

तिर्यंचो के ४८ भेद।

न०	नाम	उदाहरण
४	प्रथ्वीकाय	मट्टी पाषाणादि
४	अपकाय	भोमन्तरिक्षादि
४	तेउकाय	कणियादि
४	वाउकाय	उद्धामकादि
६	वनस्पतीकाय *	फलफुलादि
२	वेन्द्री	सख प्रमुख
२	तेन्द्री	कीड़ी प्रमुख
२	चौरिन्द्री	बिच्छू प्रमुख
४	जलचर	मच्छादि
४	स्थलचर	गौ आदि
४	खेचर	पक्षी प्रमुख
४	उरपरिसर्प	सर्पादि
४	भुजपरिसर्प	नोलादि

एवं ४८ भेद हुवे

* प्रत्येक के २ साधारण के ४

मनुष्यों के ३०३ भेद ।

१५ कर्मभूमी ३० अकर्मभूमी ५६ अंतरद्वीप एव १०१, हुवे इनको गर्भज पर्याप्ता, अपर्याप्ता तथा सन्मुर्छिम करते हुवे ३०३ भेद हुवे।

१५-कर्म भूमी ।

५ भर्त (१ जंबुद्वीपमें २ धातकी खंडमें २ पुष्करार्धमें)

५ एरवत (पूर्ववत्)

५ महाविदेह, (पूर्ववत्)

इन पन्द्रह कर्म भूमी में असी, मसी और कसी होती है। कृषी ४ प्रकार की, (सिट्टा, फली, डोडा, डागी,) इनमें २४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्ती ९ वासुदेव ९ प्रतिवासुदेव तथा ९ बलदेव एवं त्रिषष्टि शलाके पुरुष होते हैं, साधू साध्वी, श्रावक, श्राविकाओं का समूह होता है, कुंवारा शादी करता है राजा रानी की दुहाइ होती है।

३० अकर्म भूमी।

५ हेमवन्त, (१ जम्बुद्वीप में २ धातकीखंड में २ पुष्करार्द्धमें)
५ एरण्यवन्त (पूर्ववत्)
५ हरि वर्ष (पूर्ववत्)
५ रम्यक (पूर्ववत्)
५ देवकुरू (पूर्ववत्)
५ उत्तर कुरू (पूर्ववत्)

एव ३० हुई।

इनमें असी, मसी और कसी नहीं होती है, और यह कर्म भूमी से विपरीत होती है।

५६ अन्तर द्वीप।

चूल हेमवन्त तथा शिखरी पर्वत पूर्व तथा पश्चिम तर्फ लवण समुद्र परियत लम्बा है उनके दोनों तर्फ दो दो डाढें निकली हैं वे आठोंही विदिशि में गई हैं, एक एक डाढ पर सात सात द्वीप हैं, सब मिलाकर ५६ अन्तर द्वीप हुवे जम्बु द्वीप की जगती से ३०० जोजन जावे, तब एक तीनसो जोजन विस्तार वाला द्वीपों का एक चौकड़ा आता है।

नाम द्वीपों के।

रूसक,	धासक,	निपाल,	लङ्गूर,
१	२	३	४

जगती से ४०० जोजन जावे तब एक चारसो जोजन के विस्तार वाला द्वीपों का एक चौकडा आता है।

हयकरण,	गनकरण,	गोकरण,	सकुलीकरण,
१	२	३	४

जम्बुद्वीप की जगती से ५०० जोजन जावे तब पांच सो जोजन के विस्तार वाला द्वीपों का एक चौकडा आता है।

आदर्समुख,	मिंडमुख,	गजमुख,	गोमुख
१	२	३	४

जम्बुद्वीप की जगती से ६०० जोजन जावे तब छेसो जोजन के विस्तार वाला द्वीपों का एक चौकडा आता है।

हयमुख,	गयमुख,	सिहमुख,	व्याघ्रमुख,
१	२	३	४

जम्बुद्वीप की जगती से ७०० जोजन जावे तब सातसो जोजन के विस्तार वाला द्वीपों का एक चौकडा आता है।

अश्वकरण	हरिकरण,	अकरण,	सकरण,
१	२	३	४

जम्बुद्वीप की जगती से ८०० जोजन जावे तब आठसो जोजन के विस्तार वाला द्वीपों का एक चौकडा आता है।

उल्कामुख,	मेघमुख	वज्रमुख,	वज्रदन्तमुख
१	२	३	४

जम्बुद्वीप की जगती से ९०० जोजन जावे तब नौसो जोजन के विस्तार वाला द्वीपों का एक चौकडा आता है।

घणदन्त,	लठदन्त,	गुडदन्त,	शुद्धदन्त
१	२	३	४

यह एक पर्वत के हुवे इसी प्रकार दूसरे पर्वत के भी समझना, सर्व मिलाकर ५६ अन्तर द्वीप हुवे।

चउदा स्थान में जो सन्मूर्छिम जीव उत्पन्न होते हैं वे इस प्रकार है।

१ बडीनीतमें, २ लघुनीतमें, ३ नासिका के मैल में
४ कफ में ५ वमन में ६ पित्तमें
७ रुधिर में ८ मास में ९ वीर्य में
१० शरीर के मेल में ११ मृत कलेवर में १२ स्त्री पुरुष के सयोग में १३ नगर के खालमें १४ असुचीस्थानमें।

ऊपर जो मनुष्यों के भेद बताए गए उनका आयुष्य इत्यादि बताने के लिए आरों का बयान करते हैं, परन्तु इस जगह केवल अवसर्पिणी के आरों का ही वर्णन किया जावेगा।

सुखम सुखम नामक प्रथम आरा ।

प्रथम आरा चार कोड़ा कोड़ी सागरोपमका होता है। एक पुष्करा वर्त मेघ वर्षे तो १०००० वर्ष तक पृथ्वी में तेह रहता है। उत्तम से उत्तम वर्ण। उत्तम से उत्तम गध कालवी मिश्री से अनन्त गुणा रस, और अकतुल (आकड़े कीरुई) से अनन्त गुणा स्पर्श होता है, वहा जुगलिये रहते हैं। शुरु आरे में ३ पल्योपम का आयुष्य और ३ गाउ की देहमान, आरे के अत मे २ पल्योपम का आयुष्य और २ गाउकी देहमान, तीन२ दिनके आतरे तूअरकी दाल बराबर आहार लेते है, उनकी आयुष्य के ४६ दिन बाकी रहे तब एक पुत्र पुत्रीका जोड़ा पैदा होता है, भाई सो भरतार, और बहिन सो स्त्री होती है, उनके २५६ पसलिये होती है दस प्रकार के कल्पवृक्ष उनकी वांछा पूर्ण करते है।

वर्णन कल्पवृक्षों का

नाम ।	गुण ।
१ मत्तंग	मधु के समान पानी देवे
२ भगारा	सोने चांदी के भाजन देवे
३ त्रुटी	बत्तीस प्रकार के नाटक देवे
४ सूर्य	सूर्य के सदृश प्रकाश देवे
५ दीपक	दीपक के सदृश प्रकाश देवे
६ चित्राग	छओं ऋतुओंमें पुष्पों की माला देवे
७ चित्तरसा	भोजन देवे
८ आभरण	आभूषण देवे
६ गेह	गृह देवे
१० वस्त्र	वस्त्र देवे

मृत्यु के अवसर में जुगलिये, एक मौन गृह तथा दूसरा वासगृह में रहते हैं। उस अवसर में किसी को छींक किसी को उबासी आती है इनको ज्वरादि कुछ नहीं आता है, और इसी लिये उनको औषधि लेने का आवश्यकता नहीं होती है, तीन तीन दिन के बाद तूअर के दाल जितना आहार करते हैं। अन्त में मरकर देव लोक में जाते हैं, उनका कलेवर कल्पवृक्षके अधिष्ठाता लेजाते हैं।

सुखम नामक द्वितीय आरा ।

द्वितीय आरा तीन कोड़ा कोड़ी सागरोपम का होता है एक पुष्करा मेघ वर्षे तो १००० वर्ष जमीन का तेह रहता है । अच्छा वर्ण, अच्छा गध, कालवी मिश्री समान रस, अकलुल समान स्पर्श, वहां जुगलिये रहते हैं शुरु आरे में २ पल्योपम का, आयुष्य और २ गाउकी देहमान तथा आरे के अत में १ पल्योपमका आयुष्य और १ गाउ का देहमान, दो २ दिन के अन्तर से वेर को गुठली जितना आहार लेते हैं, ६४ दिवस पुत्र पालना करते हैं,१२८ पसलीयें होतो हैं, दश प्रकार के कल्पवृक्ष उनकी वाच्छा पूर्ण करते हैं, वाको सर्व प्रथम आरे के समान जानना ।

सुखम दुःखम नामक तृतीय आरा।

तीसरा आरा दो कोडा क्रोड़ी सगरोपमका होता है, एक पुष्करा मेघ वर्षे तो १०० वर्ष पृथ्वी का तेह रहता है अच्छा वर्ण, अच्छा गध, शक्कर समान रस मेदे समान स्पर्श, वहा जुगलिये रहते है। शुरु आरे में १ पल्योपम का आयुष्य, और १ गाउका देहमान, अखोर आरे में एक पूर्व कोड़ी का आयुष्य और ५०० धनुष का देहमान, एक २ दिन के अन्तर से आवले जितना आहार लेते है, ७६ दिन अपत्य पालना करते है कल्प वृक्ष वाछा पूर्ण करते है ६४ पसलिये होती है, वर्तमान अवसर्पिणी के तासरे आरे के ८४ लक्ष पूर्व, ३ वर्ष ८॥ माह शेष रहे, तव ऋषभदेव प्रभु का जन्म हुवा और ३ वर्ष ८॥ माह बाकी रहे तव मोक्ष पधारे इस आरे में १ तीर्थंकर, और १ चक्रवर्ती हुवे, १५ नीतीस्थापी, (५ हकार, ५ मकार, ५ धिक्कार)

दुःखम सुखम नामक चतुर्थ आरा।

चतुर्थ आरा ४२००० वर्ष न्यून एक कोड़ा कोड़ी सागरोपम का होता है वर्ण, गध, ठीक ठीक गुड़ समान रस, आटे समान स्पर्श, एक मेह वर्षे तो पृथ्वी का १० वर्ष तेह रहता है, शुरु आरे में एक पूर्व कोड़ी का आयुष्य, और ५०० धनुष का देहमान, अखीर आरे में १२० वर्ष का आयुष्य और ७ हाथ का देहमान, नित्य कवल प्रमाण आहार लेते हैं। जन्म परयन्त अपत्य पालना करते हैं ३२ पसलियें होती हैं। २३ तिर्थंकर ११ चक्रवर्ती ६ वासुदेव ६ प्रति-वासुदेव ६ वासुदेव जन्मे वर्तमान अवसर्पिणी के चौथे आरेके ७५ वर्ष ८॥ मास बाकी रहे तब श्री वीर प्रभु जन्मे ३ वर्ष ८॥ मास बाकी रहे तब मोक्षपधारे इस आरे में लोग मृत्यु पाकर पाँचों गती मे जाते हैं।

दु खम नामक पचम आरा ।

पचम आरा २१००० वर्ष का होता है वर्ण और गध खराव, रस धल समान, स्पर्श गोवर समान, एक मेह वर्षे तो १० दिन पृथ्वी का तेह रहना है, शुरु आरे में १२० वर्षकी आयुष्य और सात हाथ की देहमान, अखीर आरे में २० वर्षकी आयुग्य, और २॥ हाथकी देहमान, जन्म परियन्त अपत्य पालना करते हे कुन्डे भर२ आहार लेवे, १६ पसलिये होती हैं, पचम आरे के अ त तक धर्म प्रवर्ते वर्तमान अवसर्पिणी के पचम आरे के अ त के प्रथम पहर में दु पसूरिनामा चार्य, फल्गुनामेसाध्वी, नागीला नामा श्रावक और सत्यश्री नामा श्राविका का विच्छेद होगा, दूसरे पहर में विमल वाहन राजा कानाश, तीसरे पहर में अग्निका विच्छेद और चौथे पहर में सर्व नीति का नाश होगा ।

दुःखम दुःखम नामक षष्टम आरा।

षष्टम आरा २१००० वर्ष का होता है शु
आरे में २० वर्ष की आयुष्य और २॥ हाथ क
देहमान, अखीर आरे में १६ वर्ष की आयुष्
और मुंडत हाथ का देहमान होगा बारहगुन
सर्दी व घाम पड़ेगा वैतिये मनुष्य गगानद
की ७२ खोहो में रहे गे और मच्छ कच्छ व
आहार करेंगे, गगानदी का प्रवाह गाड़ी
पहिये समान होगा आधा सूर्य भीतर आध
बाहर रहेगा उस वक्त पुरुष निकलेंगे औ
मच्छ लेकर रेतीमें गाड़ देंगे, उन्हें सूर्य निकल
समय लेकर खा जावेंगे।

देवताओं के १९८ भेद ।

१० भुवनपती ८ व्यंतर ८ वाणव्यन्तर
१० ज्योतिषी १५ परमाधामी १० तिर्यग्जृंभग
३ किल्विषया १२ बारादेवलोक ९ नवग्रैविक
९ लोकान्तिक ५ अनुत्तर विमान

सब मिलाकर ९९ भेद हुये, इन्हें पर्याप्ता और अपर्याप्ता करते हुये १९८ भेद हुये ।

दस भुवन पतीयों के नाम ।

१ असुर कुमार २ नाग कुमार ३ सुवर्ण कुमार
४ विद्युत् कुमार ५ अग्नि कुमार ६ द्वीप कुमार
७ उदधि कुमार ८ दिशि कुमार ९ पवन कुमार
१० स्तनित कुमार

आठ व्यन्तरों के नाम ।

१ पिशाच २ भूत ३ यक्ष ४ राक्षस
५ किन्नर ६ किंपुरुष ७ महोरग ८ गंधर्व

आठ वाण व्यन्तरों के नाम ।

१ अणपन्नी २ पणपन्नी ३ इसीवाई ४ भूतवाई
५ कन्दीत ६ महाकन्दीत ७ कोहंड ८ पतग

दस ज्योतिषीयों के नाम ।

१ चन्द्र २ सूर्य ३ ग्रह ४ नक्षत्र ५ तारा
(ये ५ स्थिर तथा ५ चर मिलाकर १० हुवे)

पन्द्रह परमाधामी के नाम ।

१ अंब २ अंबरसी ३ श्याम ४ सबल ५ रुद्र
६ उपरुद्र ७ काल ८ महाकाल ९ असीपत्र १० धनुष
११ कुंभी १२ बालु १३ वैतरणी १४ खरस्वर १५ महाघोष

दस तिरियग जृंभग के नाम ।

१ अन्न जृंभग २ पान जृंभग ३ वस्त्र जृंभग
४ लेणजृंभग ५ पुष्प जृंभग ६ फल जृंभग
७ पुष्पफल जृंभग ८ सयण जृंभग
९ विद्युत जृंभग १० अविपत्त जृंभग

तीन किल विषया ।

१ ज्योतिषो के ऊपर और पहिले दूसरे देवलोक के नीचे।
२ पहिले दूसरे देवलोक के ऊपर और तीसरे चौथे के नीचे।
३ तीसरे चौथे देवलोक के ऊपर और पांचवे छट्ठे के नीचे

बारा देवलोक के देवताओं के नाम ।

१ सौधर्म २ इशान ३ सनत्कुमार ४ महेन्द्र
५ ब्रह्म ६ लांतक ७ शुक्र ८ सहस्र
९ आनत १० प्राणत ११ आरण्य १२ अच्यु

नव ग्रैविको के नाम।

१ सुदर्शन	२ सुप्रतिष्ठ	३ मनोरम
४ सर्वतोभद्र	५ विशाल	६ सौम्य
७ सौमनस	८ प्रीतिकर	९ आदित्य

नव लोकान्तिकों के नाम।

१ सारस्वत	२ आदित्य	३ वन्हि
४ अरुण	५ गर्दतोय	६ तुषित
७ अव्याबाध	८ आग्नेय	९ अरिष्ट

पांच अनुत्तर विमानों के नाम।

१ विजय	२ विजयवंत	३ जयंत
४ अपराजित		५ सर्वार्थसिद्ध

द्वितीय अजीव रासीके ५६० भेद।

(रूपी अजीव के ५३०—अरूपी अजीव के ३०)

रूपी अजीव के ५३० भेद।

१०० वर्ण के	१०० रसके	१०० संस्थानक के
१८४ स्पर्श के		४६ गंध के

वर्ण मे।

एक वर्ण में —५ रसके ५ संस्थानक के ८ स्पर्श के २ गन्ध के ऐसे पाँचोंवर्णों को मिला कर १०० भेद हुवे।

रस में।

एक रसमें —ऊपर लिखे अनुसार १०० भेद [illegible] यह है कि रस की जगह वर्ण को गिन लेना।

सस्थानक में।

एक सस्थानक में —ऊपर लिखे अनुसार १०० भेद विशेष यह है कि सस्थानक की जगह वर्ण को गिन लेना।

स्पर्श में।

इसमें एक खुद तथा एक प्रतिपक्षी छोड़ देना। सबब एक स्पर्श में ५ वर्ण के ५ रस के [illegible] गंध के तथा ६ स्पर्श के ऐसे २३ हुवे। इस [illegible] आठों स्पर्श के १८४ भेद हुवे।

गंध में।

एक गध में ५ वर्ण के ५ रस ५ सस्थानक के तथा ८ स्पर्शके एव २३ [illegible]। सबब दोनों गध के मिलाकर ४६ भेद हुवे।

एव रूपी अजीव के [illegible] भेद हुवे।

अरूपी अजीव के ३० भेद ।

न०	नाम	खंद	देश	प्रदेश
१	धर्मास्तिकाय	१	१	१
२	अधर्मास्तिकाय	१	१	१
३	आकाशास्तिकाय	१	१	१
४	काल	०	०	०

इस प्रकार १० भेद हुवे ।

*धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल, इन चारोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और गुण ऐसे पाच२ भेद करने हुवे कुल २० भेद हुवे, इनको प्रथम के दश भेदो में मिलाने से ३० भेद हुवे—इन ३० को रूपी अजीव के ५३० भेदो में मिलाने से कुल ५६० भेद हुवे ।

श्लोक

मंगलं भगवान्वीरो, मंगलं गौतम प्रभु ।
मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥ १ ॥

* सम्पूर्णम् *

---

* नोट —यदि इसका विस्तार देखना हो तो पँतीस बोलके थोकडे के २० वें बोलमें देख लीजिये ।

॥ श्रीजिनायनम ॥

श्रावकों के प्रत्याख्यान के ४९ भागे ।

शाक एक ११ एक करण एकजोग से भांगे उठे ९ सेरी हुई ८१ रुकीसेरी १ खुल्लीसेरी ८ ऐसे नव भांगो में रुकी ९ और खुल्ली ७२

नम्बर	नाम	करूंनहीं मनसे	करूंनहीं वचनसे	करूंनहीं कायासे	कराऊंनहीं मनसे	कराऊंनहीं वचनसे	कराऊंनहीं कायासे	अनुमोदुं नहीं मनसे	अनुमोदुं नहीं वचनसे	अनुमोदुं नहीं कायासे
१	करु नहीं मनसें	१	०	०	०	०	०	०	०	०
२	करु नहीं वचनसे	०	१	०	०	०	०	०	०	०
३	करु नहीं कायासे	०	०	१	०	०	०	०	०	०

४	कराउ नहीं मनसे	०	०	०	१	०	०	०	०	०
५	कराउ नहीं वचनसे	०	०	०	०	१	०	०	०	०
६	कराउ नहीं कायासे	०	०	०	०	०	१	०	०	०
७	अनुमोदु नहीं मनसे	०	०	०	०	०	०	१	०	०
८	अनुमोदु नहीं वचनसे	०	०	०	०		०	०	१	०
९	अनुमोदु नहीं कायासे	०	०	०	०		०	०	०	१

आक एक १२ एक करण दो जोगसे भांग उठे ९ मेरीहुई ८१

रुकीसेरी २ खुल्लीसेरी ७ ऐसेनव भांगो मे रुकी १८ खुल्ली ६३

नम्बर	नाम	करु नहीं मनसे	करु नहीं वचनसे	करु नहीं कायासे	कराउ नहीं मनसे	कराउ नहीं वचनसे	कराउ नहीं कायासे	अनुमोदु नहीं मनसे	अनुमोदु नहीं वचनसे	अनुमोदु नहीं कायासे
१	करु नहीं मनसे और वचनसे	१	१	०	०	०	०	०	०	०
२	करु नहीं मनसे और कायासे	१	०	१	०	०	०	०	०	०
३	करु नहीं वचनसे और कायासे	०	१	१	०	०	०	०	०	०
४	कराउ नहीं मनसे और वचनसे	०	०	०	१	१	०	०	०	०
५	कराउ नहीं मनसे और कायासे	०	०	०	१	०	१	०	०	०
६	कराउ नहीं वचनसे और कायासे	०	०	०	०	१	१	०	०	०
७	अनुमोदु नहीं मनसे और वचनसे	०	०	०	०	०	०	१	१	०
८	अनुमोदु नहीं मनसे और कायासे	०	०	०	०	०	०	१	०	१
९	अनुमोदु नहीं वचनसे और कायासे	०	०	०	०	०	०	०	१	१

अ कएक ३१ एक करण तीनजोगसे भागेउठे ३ तीन सेरीहुई २७ रुकीसेरी ३ खुल्लीसेरी ६ ऐसे तीन भागोमे रुकी ९ खुल्ली १८

नम्बर	नाम	करुनहीं मनसे	करु नहीं वचनसे	करु नहीं कायासे	कराउ नहीं मनसे	कराउ नहीं वचनसे	कराउ नहीं कायासे	अनुमोदु नहीं मनसे	अनुमोदु नहीं वचनसे	अनुमोदु नहीं कायासे
१	करु नहीं मन वचन और कायासे	१	१	१	०	०	०	०	०	०
२	कराउ नहीं मन वचन और कायासे	०	०	०	१	१	१	०	०	०
३	अनुमोदु नहीं मन वचन और कायासे	०	०	०	०	०	०	१	१	१

नम्बर	नाम	करु नहीं मनसे	करु नहीं वचनसे	करु नहीं कायासे	कराउ नहीं मनसे	कराउ नहीं वचनसे	कराउ नहीं कायासे	अनुमोदु नहीं मनसे	अनुमोदु नहीं वचनसे	अनुमोदु नहीं कायासे
१	करु नहीं कराउ नहीं मनसे	१	०	०	१	०	०	०	०	०
२	करु नहीं कराउ नहीं वचनसे	०	१	०	०	१	०	०	०	०
३	करु नहीं कराउ नहीं कायासे	०	०	१	०	०	१	०	०	०
४	करु नहीं अनुमोदु नहीं मनसे	१	०	०	०	०	०	१	०	०

५	करू नहीं अनुमोदु नहीं वचनसे	०	१	०	०	०	०	०	१	०
६	करूंनहीं अनुमोदु नहीं कायासे	०	०	१	०	०	०	०	०	१
७	करू नहीं अनुमोदु नहीं मनसे	०	०	०	१	०	०	१	०	०
८	करू नहीं अनुमोदु नहीं वचनसे	०	०	०	०	१	१	०	१	०
९	करू नहीं अनुमोदु नहीं कायासे	०	०	०	०	०	०	०	०	१

आंक एक २२ दो करण दो जोग से भागे उठे ९ सेरी हुई ८१

रुकीसेरी ४ खुलीसेरी ५ ऐसे ९ भागोंमें रुकी ३६ खुली ४५

नम्बर	भंग	करु नहीं मनसे	करु नहीं वचनसे	करु नहीं कायासे	कराउ नहीं मनसे	कराउ नहीं वचनसे	कराउ नहीं कायासे	अनुमोदु नहीं मनसे	अनुमोदु नहीं वचनसे	अनुमोदु नहीं कायासे
१	करु नहीं कराउ नहीं मन और वचनसे	१	१	0	१	१	0	0	0	0
२	करु नहीं कराउ नहीं मन और कायासे	१	0	१	१	0	१	0	0	0
३	करु नहीं कराउ नहीं वचन और कायासे	0	१	१	0	१	१	0	0	0
४	करु नहीं अनुमोदु नहीं मन और वचनसे	१	१	0	0	0	0	१	१	0

५	करु नहीं अनुमोदु नहीं वचनसे	०	१	०	०	०	०	०	१	०
६	करुंनहीं अनुमोदु नहीं कायासे	०	०	१	०	०	०	०	०	१
७	करु नहीं अनुमोदु नहीं मनसे	०	०	०	१	०	०	१	०	०
८	करु नहीं अनुमोदु नहीं वचासे	०	०	०	०	१	१	०	१	०
९	करु नहीं अनुमोदु नहा कायासे	०	०	०	०	०	०	०	०	१

आक एक २२ दो करण दो जोग से भागे उठे ६ सेरी हुई =१

रुकोसेरी ४ खुल्लीसेरी ५ ऐसे ९ भागोमें रुकी ३६ खुल्ली ४५

नम्बर	नाम	करु नहीं मनसे	करु नहीं वचनसे	करु नहीं कायासे	कराउ नहीं मनसे	कराउ नहीं वचनसे	कराउ नहीं कायासे	अनुमोदु नहीं मनसे	अनुमोदु नहीं वचनसे	अनुमोदु नहीं कायासे
१	करु नहीं कराउ नहीं मन और वचनसे	१	१	०	१	१	०	०	०	०
२	करु नहीं कराउ नहीं मन और कायासे	१	०	१	१	०	१	०	०	०
३	करु नहीं कराउ नहीं वचन और कायासे	०	१	१	०	१	१	०	०	०
४	करु नहीं अनुमोदु नहीं मन और वचनसे	१	१	०	०	०	०	१	१	०

अ क एक ३१ तीन करण एक जागसे भांगे उठे ३ सेरीहुई २७ रुकीसेरी ३ खुल्लीसेरी ६ ऐसे तीन भागो मे रुकीसेरी ९ खुल्ली १८

नम्बर	नाम	करू नहीं मनसे	करू नहीं वचनसे	करू नहीं कायासे	कराउ नहीं मनसे	कराउ नहीं वचनसे	कराउ नहीं कायासे	अनुमोदु नहीं मनसे	अनुमोदु नहीं वचनसे	अनुमोदु नहीं कायासे
१	करू नहीं कराउ नहीं अनुमोदु नहीं मनसे	१	०	०	१	०	०	१	०	०
२	करू नहीं कराउ नहीं अनुमोदु नहीं वचनसे	०	१	०	०	१	०	०	१	०
३	करू नहीं कराउ नहीं अनुमोदु नहीं कायासे	०	०	१	०	०	१	०	०	१

आकएक ३२ तीन करण दो जोगसे भागे उठे ३ तीन सेरीहुई २७
रुकीसेरी ६ खुलीसेरी ३ ऐसे तीन भागोमे रुकी १८ और खुली ९

नम्बर	नाम	करु नहीं मनसे	करुनहीं वचनसे	करुनहीं कायासे	कराउ नहीं मनसे	कराउ नहीं वचनसे	कराउ नहीं कायासे	अनुमोदु नहीं मनसे	अनुमोदु नहीं वचनसे	अनुमोदु नहीं कायासे
१	करु नहीं कराउ नहीं अनुमोदु नहीं मन और वचा से	१	१	०	१	१	०	१	१	०
२	करु नहीं कराउ नहीं अनुमोदु नहीं मन और कायासे	१	०	१	१	०	१	१	०	१
३	करु नहीं कराउ नहीं अनुमोदु नहीं वचन और कायासे	०	१	१	०	१	१	०	१	१

आक एक ३३ तीन करण तीन जोग से भागे उठे ३ सेरीहुई २७ रकी सेरी ६ खुल्ली सेरी ३ ऐसे तीन भागोंमे रकीसेरी १८ खुल्ली ६

नाम	करूनहीं मनसे	करूनहीं वचनसे	करूनहीं कायासे	कराउनहीं मनसे	कराउनहीं वचनसे	कराउनहीं कायासे	अनुमोदुनहीं मनसे	अनुमोदुनहीं वचनसे	अनुमोदुनहीं कायासे
कराउनहीं अनुमोदु नहीं और कायासे	१	१	१	१	१	१	१	१	१

उन-पचास मांगों की वृत्ती

नम्बर	भाग	वृत्ती	अछूती	किस किस भाग की ओर कौन सी वृत्ती ली गई								
				११	१२	१३	२१	२२	२३	३१	३२	३३
१	११	१	३८	१	०	०	०	०	०	०	०	०
२	१२	३	४६	२	१	०	०	०	०	०	०	०
३	१३	७	५२	३	३	१	०	०	०	०	०	०
४	२१	३	४३	२	०	०	१	०	०	०	०	०
५	२२	६	४०	४	२	०	२	१	०	०	०	०
६	२३	२१	२८	६	१	२	३	३	१	०	०	०

७	३१	७	४२	३	०	०	३	०	०	१	०	०
८	३२	२१	२८	६	३	०	६	३	०	२	१	०
९	३३	४६	०	६	६	३	६	६	३	३	३	१

सम्पूर्णम्

॥ श्री ॥

मान्यवरो !

निम्नलिखित भूलें जो प्रेसमें पुस्तक छपते समय शब्द टूट जाने की वजह से रह गई हैं वह और कुछ भूलें दृष्टि दोष से रह गई हैं वह कृपा कर नीचे लिखे शुद्धाशुद्धि पत्र को देख कर पठन कीजियेगा।

पेज	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१	५	छद	छंद
३	६	मचय	सचय
३	१	द्विनोय	द्वितीय
११	२०	नर्क	नर्क
५	४	६	७
१३	२	नर्क	नर्क
३	१५	१॥	२॥
१७	१३	राना	रानी
१८	६	कम	कर्म
१८	१०	विपरात	विपरीत
१६	२	रुद्र	रुद्र
१६	६	गनकरण	गवकरण
१६	६	वस्तार	विस्तार
२०	१६	मैल	मैल
२४	१४	श्रृषिमदेव	श्रीऋषभदेव
२८	६	सुयर्ण	सुवर्ण